जानिये रोहतक से भाजपाई उम्मीदवार अरविन्द शर्मा की बदमाशी का स्तर

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

राष्ट्रीय स्तर के राजनीतिक दल किस-किस स्तर के गुंडे बदमाश लोग़ों को नेता बना देते हैं, इसे समझने के लिये रोहतक से भाजपा की टिकट पर लोकसभा का चुनाव लड़ रहे अरविंद शर्मा को देख कर भली-भांति समझा जा सकता है।

झज्जर के निकट एक छोटे से गांव का अरविंद शर्मा पढाई में औसत छात्र था। सन् 1982 में रोहतक मेडिकल कॉलेज परिसर में डेंटल कॉलेज की स्थापना हुई। उस वक्त इसमें कुल 40 सीटें थी। इनमें से 8 सीटें मुख्यमंत्री द्वारा नामित की जाती थी। अरविंद का नम्बर 32 सीटों में नहीं पड़ा लेकिन जुगाड़बाज़ी करके तत्कालीन मुख्यमंत्री भजन लाल से अपना नाम नामित करा करं दाखिला पा लिया। दाखिला तो ले लिया लेकिन इसकी रुचि पढाई में कम और गुंडागर्दी और लफड़ेबाज़ी में ज़्यादा रहती थी। मेडिकल लाइन के छात्रों में एक अनकही प्रथा है जिसके अनुसार एमबीबीएस वाले छात्र अपने आपको सबसे सुपीरियर व डेंटल तथा वेटनरी वालों को इन्फीरियर मानते हैं। इसे लेकर डेंटल तथा वेटनरी वालों के मन में एक हल्के-फुल्के द्वेष की भावना रहती है।

इसी द्वेष की भावना से ग्रसित अरविंद मेडिकल कॉलेज के छात्रों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के इरादे से उनके होस्टलों में अपने 4-6 बाहरी गुंडों को लेकर अक्सर जाता रहता था। होस्टल में किसी डॉक्टर की हिम्मत नहीं होती थी जो इसका विरोध करे। एक दिन शराब के नशे में ये लोग जब कुछ ज़्यादा ही शोर करने लगे तो एक पीजी छात्र ने कमरे से बाहर निकलकर इन्हें शोर मचाने से मना किया तो अरविंद व उसके गुंडों ने पहले तो उसे पीटा और फ़िर एक बाहरी गुंडे ने उस छात्र को ऐसा चाकू मारा कि उसकी मौत हो गयी। हत्या के मुकदमे में अरविंद सहित सभी गुंडे गिरफ़्तार हो गये। कुछ दिन बाद अरविंद पुलिस हिरासत में परीक्षा देने कॉलेज आया तो मेडिकल कॉलेज छात्रों ने जबरदस्त प्रदर्शन कर उसके रे स्टीके शन यानी उसे कॉलेज से बहिष्कृत करने की मांग की ।

जैसा कि इस देश में आपराधिक न्याय व्यवस्था में होता है, सबूतों, गवाहों व पुलिस की मिलीभगत से अरविंद तो साफ़ बरी हो गया क्योंकि वह चाकू मारने वाला नहीं था। जिसके चाकू मारने से मौत हुई थी वह भी थोड़े-बहुत दिन बाद छूट गया। विदित है कि हत्यारा जब कानून के शिकंजे से छूट जाता है तो वह पूरे समाज के लिये एक बड़ा खौफ़ बन जाता है। लिहाजा अरविंद ने उस हत्यारे के साथ मिल कर अच्छा-खासा गैंग बना लिया। यह गैंग तो शहर भर में गुंडागर्दी करता व रंगदारी वसूलता था लेकिन अरविंद

अरविंद और चन्द्रास्वामी

राजनीतिक गलियारों में किसी वक्त खूब धूम मचाने वाले चन्द्रास्वामी से भी अरविंद की घनिष्ठता उस समय बढ गयी थी जब 8 साल (1986 से 1995) बम्बई में भूमिगत रहा था। समझा जाता है कि इसी दौर में इसने जो काली कमाई की थी उसमें चन्द्रास्वामी का भी पूरा हाथ था। चन्द्रास्वामी ने ही अरविंद को योजना बना कर दी थी कि 200-300 करोड़ में हरियाणा जैसे राज्य की राजनीति पर पूरा कब्ज़ा किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त तीन से चार हज़ार करोड़ खर्च करके केन्द्रीय सत्ता कब्ज़ाने लायक सांसद जिता लायेंगे। उसके बाद पूरे देश पर कब्ज़ा हो जायेगा। लेकिन किन्हीं कारणों से उक्त योजना सिरे नहीं चढ़ पाई।

उधर बम्बई में अपने जिन साझेदारों का सफ़ाया करके अरविंद वापस हरियाणा आया था, उनके आदमियों ने 1997 में इस पर तीन गोलियां उस वक्त दाग़ी, जब यह सोनीपत में मंच पर भाषण दे रहा था। यह तो बच गया लेकिन इसके 2 साथी मारे गये थे। कितना 'बढिया' राजनेता चुन कर लाई है भाजपा, रोहतक वालों का प्रतिनिधित्व करने के लिये।

इस गैंग का इस्तेमाल केवल डॉक्टरों का 'शिकार' करने के लिये ही करता था। इसके लिये उसका जब जी चाहता था वह डॉक्टरों का शिकार करने पहुंच जाता था। इस शिकारी से तंग आये डॉक्टरों ने विचार-विमर्श करके अपने को संगठित किया और योजना बनाई कि अगली बार जब यह गिरोह आये तो घेर लो और मुकाबला करो। अगली बार दिसम्बर 1986 में, ऐसा ही हुआ, जब सामने से कड़ी चुनौती मिली तो अरविंद भाग खड़ा हुआ, अन्य गैंगस्टर भी पिट-छित कर जैसे-तैसे भाग निकलने में कामयाब हो गये। परन्तु वह हत्यारा फ़ंस गया जिसने एक डॉक्टर की हत्या कर रखी थी और मुकदमे से बरी हो गया था। उस को डॉक्टरों ने खूब जम कर पीटने के बाद उसके दोनों हाथ व पैर कई जगह से तोड़ दिये और उसे अपनी ही अस्पताल में भर्ती कर लिया। पुलिस को दिये अपने बयान में उसने कहा कि वह सामने आने पर हमलावरों को पहचान सकता है। लेकिन इस बात का उसके पास कोई जवाब नहीं था कि वह डॉक्टरों के होस्टल में करने क्या आया था? खैर, 11 दिन बाद, बोन मैरो के खून की धमनियो में जमने से उसकी मृत्यु हो गयी। बेशक, कुछ डॉक्टरों की गिरफ़्तारी तो हुई लेकिन इस बार डॉक्टरों का केस काफ़ी मजबूत था, लिहाज़ा सभी डॉक्टर भी बरी हो गये।

अरविंद की खासियत यह थी कि वह गुंडागर्दी के साथ-साथ जेब में रखे पिस्टल से भी डॉक्टरों को डराता था, लेकिन जब कोई सामने से टकराने वाला मिल जाये तो हाथ जोड़ने में भी देर नहीं लगाता था। डरपोक इतना था कि अपने साथी के मारे जाने के बाद यह रोहतक छोड़ कर ऐसा भागा कि बम्बई जाकर ही सांस लिया। बेशक यह बदमाश था लेकिन दिमाग़दार भी खूब था। बदमाशी के दम पर यह बम्बई के काले धंधों की दुनिया में घुस गया जहां इसने अपने शातिर दिमाग़ का पूरा इस्तेमाल करते हुए सैंकड़ों करोड़ का साम्राज्य खड़ा कर लिया और मौका मिलते ही अपने पार्टनर का भी सफ़ाया कर दिया।

अथाह धन का मालिक बन कर यह 1995 में रोहतक उस वक्त आया जब शहर में बाढ आई हुई थी। उस वक्त इसने शहर व आसपास कुछ समाज सेवा करके भलाई लेने का प्रयास किया था। लेकिन असली काम इसने सोनीपत हल्के में किया। वहां के सैकड़ों गांवों में इसने लाख, डेढ लाख खर्च

करके तथा सोनीपत शहर में एम्बूलेंस सेवा, शव वाहन सेवा तथा पानी वितरण की सेवा करके लोग़ों के मन में जगह बना ली। क्षेत्र की हर कन्या की शादी में कन्यादान तथा किसी की मौत पर श्रद्धांजलि देने पहुंच जाता था। विदित है कि आनंद पर्वत दिल्ली में शराब व लड़कियों का धंधा करने वाले देवराज दिवान ने भी इसी तरह पैसा खर्च करके लोग़ों के दिलों में जगह बना ली थी और निर्दलीय चुनाव लड़ कर सोनीपत से विधायक बन गया था।

इसी देवराज दीवान से प्रेरित होकर अरविंद ने भी सोनीपत वालों का खूब बेवकूफ़ बनाया। किसी पार्टी का टिकट न मिलने पर यह 1996 में सोनीपत से निर्दलीय चुनाव लड़ गया और मुकाबले में खड़े तत्कालीन कांग्रेस राज्य प्रधान धर्मपाल मलिक को बुरी तरह से हराया। बस फ़िर क्या था, इसकी राजनीतिक हल्कों में पूरी धाक जम गयी। राजनीति के जो धुरंधर जनता को बेवकूफ़ बनाने में माहिर समझते थे, उन्हें अरविंद ने बता दिया कि वह उनसे भी बड़ा धुरंधर है। अगला चुनाव इसने शिव सेना के टिकट पर सोनीपत से लड़ा और हार गया। परन्तु इसने हिम्मत नहीं हारी।

2004 व 2009 के संसदीय चुनाव इसने कांग्रेस के टिकट पर करनाल से लड़े व जीत दर्ज कराई। यहां कांग्रेस का चरित्र भी देखने लायक है। जिसने इसके राज्य प्रधान को सोनीपत में हराया, फ़िर शिव सेना के टिकट पर चुनाव लड़ा, उसे ही अपना प्रत्याशी बनाया। यही तो है कांग्रेस का बिकाऊ चरित्र। कांग्रेस ने 2014 में भी इस पर दांव लगाया था, लेकिन मोदी लहर में यह हार गया। इसके बाद अरविंद ने 2014 में ही विधानसभा चुनाव बसपा यानी मायावती के टिकट पर करनाल जिले से ही लड़ा। उस वक्त इसे बसपा की ओर से भावी मुख्यमंत्री के तौर पर प्रस्तुत किया गया था, परन्तु चुनाव हारने के बाद इसने बसपा भी छोड़ दी।

अब 2019 के चुनाव में यह काफ़ी देर तक इन्तज़ार करता रहा कि कांग्रेस इसे करनाल से टिकट दे या भाजपा। जब दोनों ने ही इसे करनाल से टिकट नहीं दिया तो भाजपा ने इसे रोहतक का टिकट पेश किया क्योंकि इस तथाकथित राष्ट्रवादी पार्टी के पास रोहतक से कोई उम्मीदवार नहीं था जो पार्टी को मोटा चंदा दे सके व चुनाव पर भी अंधा-धुंध पैसा बहा सके। अरविंद ने भी समय की नजाकत समझते हुए एवं सत्तारूढ दल में घुसने को ही बेहतर मानते हुए रोहतक से भाजपा टिकट पर चुनाव लड़ना बेहतर समझा।

उक्त कहानी से तमाम राजनीतिक दलों व उनके नेताओं के चरित्र को समझा जा सकता है तथा इसी से यह भी समझाा जा सकता है कि ये नेता लोग जो पैसा खर्च करते हैं वह आता कहां से है और उसे खर्च करने के पीछे मंशा क्या है?

संतनगर में अनिल व महिपाल का शराब व सट्टा बाज़ार जोरों पर

फ़रीदाबाद (म.मो.)ओल्ड फ़रीदाबाद चौक व रेलवे स्टेशन बीच बसे संत नगर में अनिल व महिपाल का अवैध शराब बेचने व सट्टे का धंधा पूरे जोरों पर है। बीते माह बड़खल पुल के नीचे चलने वाले सट्टा बाजार का समाचार प्रकाशित होने पर ओल्ड फ़रीदाबाद थाने की पुलिस को कुछ शर्म महसूस हुई तो उन्होंने अपनी मोटी मंथली त्याग कर उस सट्टा बाज़ार को उखाड़ फ़ेंका। लेकिन इसका सीधा लाभ संत नगर में यही काला धंधा करने वाले अनिल व महिपाल को होने लगा। बड़खल पुल व संतनगर के मध्य बमुश्किल 2 किलोमीटर का फ़ासला है। ऐसे में बड़खल पुल वाले तमाम ग्राहक संत नगर पहुंचने लगे। जाहिर है जब काला धंधा करने वालों का मुनाफ़ा बढ़ता है तो इन्हें संरक्षण देने वाली पुलिस की मंथली भी बढती है। इसी काली कमाई को बनाये रखने के लिये थाना सेक्टर 17 व इसी की चौकी सेक्टर 16 इस धंधे को अपने संरक्षण में चलवा रहे हैं। नये-नये बने सेक्टर 17 के थाने में लूट-कमाई के साधन अभी बहुत सीमित हैं। ऐसे में वे इस मंथली को गंवाना नहीं चाहेंगे।

निम्न वर्ग की बस्ती संतनगर में ग़रीब मज़दूर वर्ग ही रहता है। यहां बिकने वाली अवैध शराब के साथ-साथ बिकने वाली कच्ची शराब से जिस दिन कोई बड़ी दुर्घटना हो जायेगी उस दिन सरकार कड़ी कार्यवाही और जांच के नाम पर 2-4 कर्मचारियों को निलम्बित करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेगी, लेकिन आज कोई कार्यवाही करने को तैयार नहीं, क्योंकि कालेधंधे से होने वाली काली कमाई ने सब के हाथ बांध रखे हैं।

संजय मौर्या का अनोखा प्रचार अभियान

फरीदाबाद (म.मो.) इंकलाबी मजदूर केन्द्र के आजाद प्रत्याशी साथी संजय मौर्या जिनका चुनाव चिन्ह आटो रिक्शा है, का प्रचार अभियान जोर शोर से चल रहा है । 12,मई को फरीदाबाद सीट पर चुनाव होना तय है। 26,अप्रैल को चुनाव चिन्ह मिलने के बाद संगठन के कार्यकर्ता अपनी पुरी उर्जा के साथ चुनाव प्रचार अभियान चला रहे हैं। कार्यकर्ता गली गली में घर घर जा कर संगठन की राजनीति व जनता की जरूरतों के बुनियादी मुद्दों पर बात कर रहे हैं।

इंकलाबी मजदूर केंद्र अपने गठन से ही देश में लागू की जा रही निजीकरण, उद्दारीकरण एवं वैश्वीकरण की नीतियों का विरोध करता आ रहा है । लोकसभा प्रत्याशी संजय मौर्या ने बताया कि "अच्छे दिनों"का सपना दिखा कर प्रधानमंत्री की कुर्सी पर विराजमान हुए नरेंद्र मोदी ने उक्त नीतियों को तेजी से लागू कर अदाणी-अंबानी जैसे कारपोरेट घरानों को अनगिनत लाभ पहुँचाया है। मोदी ने मजदूरों के श्रम अधिकारों खत्म कर औद्योगिक घरानों को लूटने की खुली छूट दे दी है । पिछले पांच साल में मोदी ने रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे जनता की बुनियादी जरूरतों को पूरी तरह बाजार हवाले कर दिया है।

मोदी राज में पूंजीपति माला माल है

28,अप्रैल को इंकलाबी मजदूर केंद्र के साथियों ने संजय कालोनी, गोन्छी गांव, जीवन नगर, जवाहर कालोनी, सारन गांव, पर्वतीय कालोनी के एरिया में शानदार साइकिल जुलूस निकाला गया ।

श्रमिक जनता, किसान, छात्र नौजवान, सामान्य महिलाएं बदहाल हैं । प्रचार मे शामिल एक अन्य कार्यकर्ता ने कहा कि जब हम सबका देश एक है तथा एक ही सरकार बनती है तो सबको योग्यतानुसार सरकारी नौकरी क्यो नहीं मिलती है ? सबके लिए समान व गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा क्यों ना मिले ? सबको बेहतर व एक जैसी स्वास्थ्य सुविधा क्यों नहीं मिलती है ? इसकी एक ही वजह है, कारपोरेट राज । जिसकी नरेंद्र मोदी चौकीदारी कर रहे हैं । संजय मौर्या कारपोरेट राज को खत्म कर देश में भगत सिंह के सपनों का समाजवादी राज, मजदूरों - गरीब किसनों का राज बनाने के लिए, मजदूरों को एकजुट करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं । इसी संघर्ष को मजबूत बनाने के लिए लोगों से वोट मांग रहे हैं ।

अवैध निर्माणों का 'मंथन' कर रही हैं निगमायुक्त

फ़रीदाबाद (म.मो.) सूरजकुंड रोड पर बने एक अवैध बैंक्विट हॉल में लगी आग पर बातचीत करते हुए निगमायुक्त अनीता यादव ने एक पत्रकार को बताया कि उन्होंने अवैध फ़ार्म हाउसों व बैक्विट हॉलों का सर्वे करा लिया है। सर्वे रिपोर्ट भी आ गयी है जिस पर अभी मंथन चल रहा है।

इस मंथन का सीधा मतलब है सर्वे रिपोर्ट को मथ कर उसमें से मक्खन निकालना। दरअसल सर्वे कराने का पूरा नाटक ही मक्खन निकालने यानी अवैध निर्माताओं से वसूली करने की प्रक्रिया का हिस्सा है। वास्तव में सर्वे तो हर चीज़ का पहले से हुआ रहता है। कोई भी अवैध निर्माण की जब एक ईंट लगाता है तो निगम वाले वहां पहुंच कर अपना वसूली धंधा शुरू कर देते हैं।

सुधी पाठकों ने पढा होगा कि किस प्रकार शहर के रिहायशी हिस्सों में अवैध रूप से 'ओयो' नाम से कमरों की बुकिंग का धंधा चल रहा है। सेक्टर आठ के नागरिकों की शिकायत पर मंत्री विपुल गोयल ने इन्हें बंद कराने के लिये सख्त कार्यवाही करने का भरोसा दिया था। परन्तु आज तक कोई कार्यवाही तो दूर इन 'ओयो' होटलों की संख्या बढती ही जा रही है। इस मामले में भी कई महीने तक सर्वे हुआ और अब शायद 'मंथन' चल रहा है।